# मटर
## (PEA)

मटर एक प्रमुख रबी दलहनी फसल है, जिसका उपयोग कई तरह से किया जाता है। मटर में 22.5 प्रतिशत प्रोटीन के अलावा कैल्शियम, थायमिन, लोहा, व आग्जैलिक अम्ल पाया जाता है।

**प्रजातियाँ**

**दाना मटर अधिक बढ़ने वाली :** रचना, पन्त मटर– 5 व मालवीय मटर– 2

**कम बढ़ने वाली :** सपना, अपर्णा, स्वाती, शिखा, मालवीय–15, इन्द्र, जय, आई.पी.एफ.डी.– 1–10, पूसा प्रभात व पूसा पन्ना

**सब्जी मटर**

**अगेती –** अर्ली दिसम्बर, आर्किल, पन्त मटर– 2, आजाद मटर– 3, ई–6, वी.एल–7 व पूसा प्रगति।

**मध्य व पिछेती –** आजाद मटर– 1, आजाद मटर– 2, आजाद मटर– 4, विवेक– 6, वोनविले, पन्त उपहार, काशी नन्दिनी, काशी उदय, काशी शक्ति व काशी मुक्ति।

**बीज एवं बोआई**

| बोआई का समय | बीज दर (प्रति हेक्टेयर) | बीज शोधन | बोआई की दूरी |
|---|---|---|---|
| दाना मटर<br>15–31 अक्टूबर | सामान्य प्रजाति : 80–100 किलोग्राम<br>बौनी प्रजाति : 100–125 किलोग्राम | राइजोबियम कल्चर द्वारा बीज उपचार | सामान्य प्रजाति : 30–35X10सेंमी<br>बौनी प्रजाति : 22–25X10सेंमी |
| सब्जी मटर<br>15 अक्टूबर – 15 नवम्बर | अगेती प्रजाति : 100–125 किलोग्राम<br>मध्यम एवं पिछेती : 80–100 किलोग्राम | | अगेती प्रजाति : 20–25X8सेंमी<br>मध्यम व पिछेती : 30–35X8सेंमी |

सिंचाई की सुविधा होने पर सब्जी मटर की बोआई 15 सितम्बर से प्रारम्भ कर सकते हैं। अगेती बोआई करने पर प्रायः जड़ सड़न, उकठा व तना मक्खी द्वारा हानि पहुँचती है।

**उर्वरक प्रबन्धन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| मटर बोआई के समय (प्रति हे0) | बढ़ने वाली प्रजाति : 44 किलोग्राम यूरिया बौनी प्रजाति : 87 किलोग्राम यूरिया | 312 किलोग्रामा एस.एस.पी. | 67 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश |
| सब्जी मटर बोआई के समय (प्रति हे0) | 65 किलोग्राम यूरिया | 312 किलोग्राम एस.एस.पी. | 67 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश |
| टाप ड्रेसिंग (प्रति हे0) | बोआई के 25-30 दिन बाद 65 किलोग्राम यूरिया की टाप ड्रेसिंग। | | |

**जल प्रबन्धन**

मटर प्रायः असिंचित क्षेत्रों में पैदा की जाती है। यह कुछ सीमा तक सूखा सह लेती है। वर्षा न होने पर दो हल्की सिंचाई (5 सेंमी), पहली फूल निकलते समय व दूसरी फलियों में दाना भरते समय करनी चाहिये। जाड़े की वर्षा न होने पर सिंचाई करने से उपज में 100 प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि होती है। अधिक नमी होने पर उपज में कमी आती है।

**खरपतवार नियन्त्रण**

मटर में दो निराई, बोआई के 20 व 45 दिन बाद करनी चाहिये। खरपतवारों के रासायनिक नियन्त्रण हेतु बोआई के 2 दिन के अन्दर पेण्डीमेथीलीन 3.3 लीटर 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

**एकीकृत रोग–कीट प्रबन्धन**

**बीज एवं मूल विगलन रोग :** इस रोग में या तो बीज सड़ जाते हैं या उगने के बाद पौधे मर जाते हैं।

**प्रबन्धन :** इस रोग की रोकथाम के लिये वेनलेट तथा कैप्टान 2.5 ग्राम या ट्राईकोडर्मा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर से शोधन करना चाहिये।

**मृदुरोमिल आसिता रोग :** मृदुरोमिल आसिता रोग में पत्तियों की निचली सतह पर रूई की तरह उभरे हुये सफेद से लेकर कुछ पीले रंग की फफूँद वृद्धि दिखाई पड़ती है, जो नम वातावरण में तेजी से बढ़ती है।

**प्रबन्धन :** इस रोग की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर मैंकोजेब 2 किलोग्राम का छिड़काव करना चाहिये। इससे किट्ट (Rust) रोग भी नियन्त्रित हो जाता है।

**चूर्णिल आसिता :** इस रोग में पत्तियों, फलियों तथा तनों पर सफेद चूर्ण सा फैल जाता है, मटर में फूल आते समय, विशेषकर सूखे मौसम में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है।

**प्रबन्धन :** रोगरोधी किस्में उगने के साथ रोग लगने पर घुलनशील गंधक 3.0 किलोग्राम या ट्राइडोमार्फ 80 ई.सी. 500 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 12–15 दिनों के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करते हैं।

**उकठा रोग :** उकठा रोग का प्रभाव अगेती फसल पर अधिक होता है। पौधा पीला हो जाता है। पत्तियाँ नीचे से ऊपर झड़ती है। पौधा मुरझा कर सूख जाता है।

**प्रबन्धन :** उकठा रोग के रोकथाम के लिये बीमारी वाले खेत में 3–4 वर्ष मटर न बोयें। कार्बेन्डाजिम या बेनोमिल से उपचारित बीज बोयें।

**फली छेदक कीट :** यह कीट देर से बोयी गई फसल में जब तापक्रम अधिक होता है, विशेषकर उस समय फलियों में छेदकर अन्दर से दानों को खा जाती है।

**प्रबन्धन :** इस कीट की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 10–15 फेरोमोन ट्रेप लगायें, एच.ए.एन.पी.वी. वायरस 250 सूड़ियों के तुल्य शाम के समय छिड़काव करें। 5 प्रतिशत नीम सीड कर्नेल एक्सट्रैक्ट का 7–10 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें। अथवा इण्डोसल्फान 36 ई.सी. 750 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

## xfrfof/k pkVZ

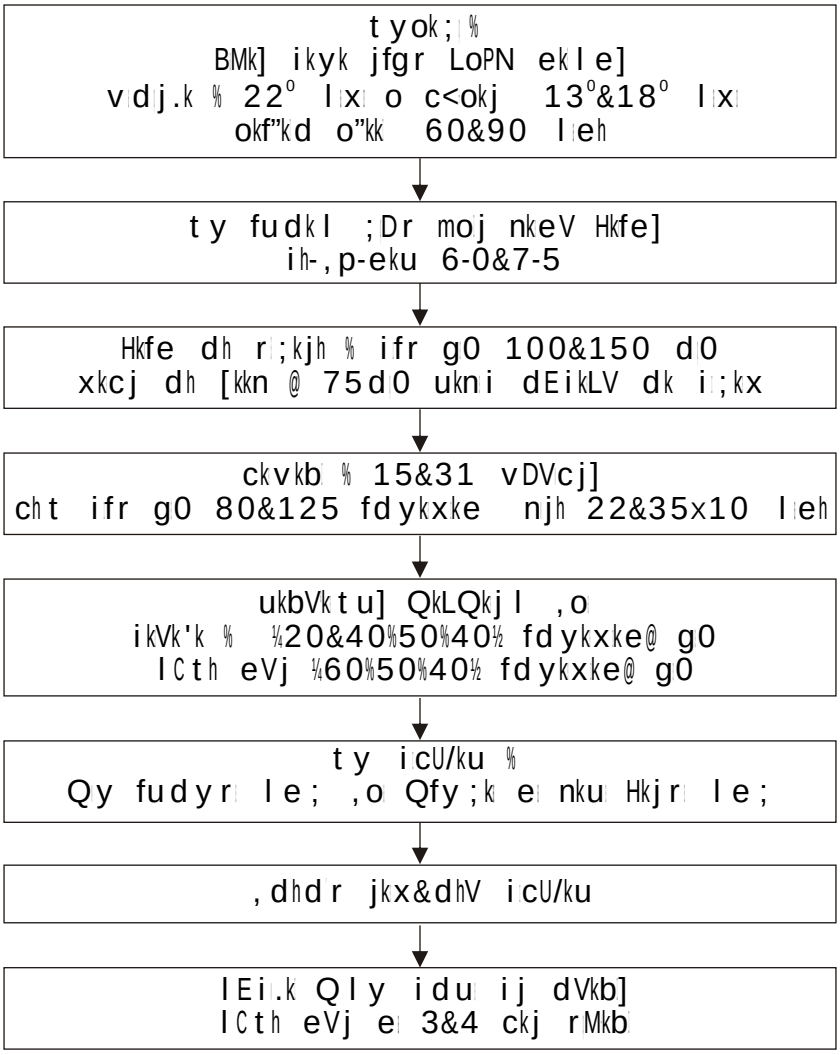

t yok;q %
BMk] ikyk jfgr LoPN eksle]
vkSlr rkieku % 22° lsxzs o c<+okj 13°&18° lsxzs
okf"kZd o"kkZ 60&90 lseh

↓

t y fudkl ;qDr moZj nkeV Hkwfe]
ih-,p-eku 6-0&7-5

↓

Hkwfe dh rS;kjh % ifr gs0 100&150 dq0
xkcj dh [kkn @ 75dq0 uknsi dEiksLV dk iz;kx

↓

ckvkbZ % 15&31 vDVwcj]
cht ifr gs0 80&125 fdyksxzke njh 22&35x10 lseh

↓

ukbVªkstu] QkLQksjl ,o
ikVk'k % ¼20&40%50%40½ fdyksxzke@ gs0
lCth eVj ¼60%50%40½ fdyksxzke@ gs0

↓

t y icU/ku %
Qy fudyrs le; ,oa Qfy;ka eas nkus Hkjrs le;

↓

,dhd`r jksx&dhV icU/ku

↓

lEiw.kZ Qly idus ij dVkbZ]
lCth eVj esa 3&4 ckj rqMkbZ

**ifr gSDVs;j eVj dh [ksrh dk vk;&O;; ¼o"kZ 2009½**

| mRiknu | mit ¼dq0@gs0½ | fod; nj ¼:0@dq0½ | lEiw.kZ vk; ¼:0@gs0½ | mRiknu ykxr ¼:0@gs0½ | 'kq) vk; ¼:0@gs0½ | ykHk ykxr vuqikr |
|---|---|---|---|---|---|---|
| nkuk eVj | 20 | 1730 | 34600 | 14000 | 20600 | 2-5%1 |
| lCth eVj | 100 | 600 | 60]000 | 18000 | 42000 | 3-3%1 |